26

अर्थालंकार

पूर्व पाठ में शब्दालंकारों का निरूपण किया गया। अब इस प्रकरण में अर्थालंकार का निरूपण प्रारम्भ करते हैं। सौन्दर्य ही अलंकार है यह पूर्व पाठ में पढ़ चुके हैं। कौन अलंकृत करता है, शब्द या अर्थ। उसके द्वारा काव्य की आत्मा रस उपकृत होती है। अत: अलंकार कहाँ होता है? शब्द या अर्थ में। अलंकार ही काव्य होता है यह कुन्तक कहते हैं। जैसे केयूर हार आदि सौन्दर्यजनक हैं और आत्मा के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। उसी प्रकार काव्यशरीरभूत शब्द और अर्थ के सौन्दर्य उत्पादन द्वारा काव्य की आत्मा रस को बढ़ाते है। परमार्थ से उक्ति वैचित्र्य ही अलंकार है। किस के लिए उक्ति वैचित्र्य है काव्य में लोकोत्तर रमणीयत्व निष्पत्ति के लिए। अथवा रस पोषण को स्वीकार करते हैं। शब्द वैचित्र्य और अर्थ वैचित्र्य से अलंकार दो प्रकार होते हैं। कुछ के मत में उभयालंकार भी होता है। अर्थालंकार में अर्थ की प्रधानता दिखाई देती है। क्योंकि अर्थ के कारण से ही काव्य में लोकोत्तर चमत्कार उत्पन्न किया जाता है। उसके द्वारा ही यह काव्य रमणीय होता है। उनमें अर्थालंकार बहुत प्रकार के है। अलंकारों में सादृश्य घटित उपमालंकार का शुरु में विचार किया जाता है। क्योंकि अर्थालंकारों में सादृश्यमूलक अलंकार की प्रधानता जिनमें होती है। उसमें प्रथमत: उपमालंकार कहा जाता है और उपमालंकार विशेष सौन्दर्यजनक है। साहित्य में उपमा का बहुत प्रयोग हुआ है। उपमा अत्यन्त प्राचीन है। अत: एव उपमालंकार का प्रथम वर्णन करके अन्य अर्थालंकारों का वर्णन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- अर्थालंकारों के लक्षण को जान पाने में;
- अर्थालंकारों के उदाहरणों को जान पाने में;
- अर्थालंकार के वैशिष्ट्य को जान पाने में;

- उपमा अलंकार का सविस्तार ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- श्लोकों में अर्थालंकार का निर्णय कर पाने में;
- स्वयं अलंकारों के अनुसार श्लोक निर्माण कर पाने में और;
- उदाहरण में अलंकार के लक्षणों का समन्वय कर पाने में।

26.1 अर्थालंकार

अर्थ चमत्कार को अवलम्बन करके अर्थालंकार स्वीकार किये जाते है। अर्थात् जिस अलंकार में अर्थ को आश्रय करके कोई चमत्कृति होती है तो वह अर्थालंकार कहा जाता है। अर्थालंकार में सम अर्थक शब्द को परिवर्तित किया जाता है तो अलंकार वैसे ही रहता है। अर्थात् समानार्थक शब्द प्रयोग शक्य होता है तथा अर्थ प्रधान होता है। उपमा रूपाकादि अर्थालंकार हैं।

विशेषताएँ

1. अर्थालंकार में समार्थक शब्द का प्रयोग शक्य होता है।
2. अर्थालंकार में शब्दपरिवर्तन समर्थ होता है।
3. अर्थालंकार में अर्थ परिवर्तन समर्थ होता है।
4. अर्थालंकार का उदाहरण उपमारूपकादि है।

26.2 उपमालंकार

साहित्यदर्पण ग्रन्थ में विश्वनाथ ने अतिप्राचीन व अधिक प्रयोग होने से उपमा अलंकार का सर्वप्रथम वर्णन किया है।

लक्षण - साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाच्यैक्य उपमा द्वयोः।

अन्वय - वाक्यैक्ये द्वयोः अवैधर्म्यं वाच्यं साम्यम् उपमा अलंकारः।

शब्दार्थ - वाक्यैक्ये = एक वाक्य में, द्वयोः = उपमान और उपमेय दोनों का, अवैधर्म्यम् = विरूद्धधर्मरहित, वाच्यम् = कहा जाय, साम्यम् = समानता, उपमा = उपमालंकार होता है।

सामान्यार्थ - विजातीय वस्तुओं के विरूद्ध धर्म को न कहकर यदि गुणक्रियागत समानता को इव आदि शब्द से प्रतिपादित हो, तो वह उपमालंकार होता है। साधरणतया दो वस्तुओं के मध्य साधर्म्य और वैधर्म्य सम्बन्ध होता है। दोनों वस्तुओं के वैधर्म्य को न कहकर इव आदि शब्दों से सादृश्य को कहा जाता है। वह सादृश्य गुण और क्रियागत होता है। अर्थात् उपमान और उपमेय विजातीय वस्तुओं के मध्य कोई समानता की कल्पना की जाती है। वहाँ

उपमालंकार होता है। इस प्रकार इव आदि शब्दों से समानता की स्पष्ट प्रतीति होती है। दोनों वस्तुओं के बीच विरूद्ध धर्म का उल्लेख न हो। साम्य साधरण धर्म सम्बन्ध रूप सादृश्य का नाम उपमा अलंकार है। उपमान उपमेय से कल्पित दो पदार्थो का समान धर्म से साधर्म्य या समानता का निरूपण किया जाता है। समानता साधर्म्य गुण क्रियादिरूप होता है। उपमान उपमेय उभयगत धर्म ही सधर्म होता है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय – 'चन्द्र इव मुखं सुन्दरम्' यह उदाहरण है। चन्द्र और मुख दोनों वस्तुएँ भिन्न है। सौन्दर्यत्व और आह्लादकत्व चन्द्र एवं मुख दोनों में है। सौन्दर्यत्वादि गुण से चन्द्र और मुख की समानता कही है। इव आदि शब्द से चन्द्रमुख की सादृश्यता स्पष्ट कही है। यह लक्षण समन्वय है। अतः यह वाक्य उपमा का है।

वह उपमालंकार दो प्रकार का होता है – 1. पूर्णोपमा 2 लुप्तोपमा।

26.2.1 पूर्णोपमा लक्षण

सा पूर्णा यदि सामान्य धर्म औपम्यवाचि च।
उपमेयं चोपमानं भवेत् वाच्यम्।

अन्वय – यदि सामान्य धर्म औपम्यवाचिशब्दः उपमेयं उपमानं च भवेत् सा पूर्णा उपमा इति वाच्यम्।

सामान्यार्थ – जिस अलंकार में सामान्य धर्म, उपमावाचक शब्द, उपमेय और उपमान होता है वह पूर्णोपमा कहा जाता है। पूर्णोपमा के चार अंग होते हैं। 1. उपमेय, 2. उपमान, 3. साधरणधर्म, 4. सादृश्यवाचक शब्द।

उदाहरण में लक्षण समन्वय – 'कमलम् इव मुखं मनोज्ञम्' अर्थात् पद्म के समान सुन्दर मुख। यहाँ उपमेय और उपमान में मनोज्ञ धर्म समान है। इव उपमावाचक शब्द है। मुख उपमेय और कमल उपमान है। अतः चारों का वर्णन होने से पूर्वोपमा अलंकार है।

पूर्णोपमा के पुनः दो भेद है। श्रोती और आर्थी।

26.2.2 लुप्तोपमा

जहाँ उपमा वाचक घटकों (उपमान, उपमेय, उपमावाचक शब्द और साधारण धर्म) में से एक दो या तीन का उल्लेख नहीं हो तो लुप्तोपमा होता है।

लक्षण – लुप्ता सामान्यधर्मादेः एकस्य यदि वा द्वयोः।
त्रयाणां वानुपादाने श्रौत्यार्थी सापि पूर्ववत्।।

अन्वय – यदि सामान्य धर्मादेः एकस्य द्वयोः त्रयाणां वा अनुपादने लुप्ता। सापि पूर्ववत् श्रोत्यार्थी।

सामान्यार्थ - सामान्य धर्म, उपमेय उपमान और उपमावाचक शब्द इन में से एक, दो या तीनों का अनुपादान होता है तो वह लुप्तोपमा कही जाती है। अर्थात् यदि उपमा के चार अंगों में से एक, दो या तीन अंगों का लोप हो तो वह लुप्तोपमा होती है। वह लुप्तोपमा भी दो प्रकार की होती है। 1. श्रोती और 2. आर्थी।

उदाहरण में लक्षण समन्वय - 'मुख' चन्द्र इव' इस उदाहरण में लुप्तोपमा है। क्योंकि इस में चन्द्र और मुख का सादृश्य मनोज्ञत्व के कारण ही है। दोनों में मनोज्ञत्व है। अत: मनोज्ञत्व रूप साधारण धर्म है। इस वाक्य में मुख उपमेय, चन्द्र उपमान, इव उपमा वाचक शब्द इन तीनों का उल्लेख है और साधरण धर्म का लोप है। अत: एक के लोप होने से लुप्तोपमा का उदाहरण है।

26.3 अनन्वयालंकार

साहित्यदर्पण में अनन्वयलंकार का लक्षण- **'उपमानोपमेयत्वम् एकस्यैव त्वनन्वय:'।**

सामान्यार्थ - एक ही वस्तु को युगपत् रूप से उपमेय एवं उपमान मान लिया जाये तो अनन्वयालंकार होता है। अर्थात् उपमानोपमेय भाव एक वाक्यगत हो तो अनन्वयालंकार होता है। यदि अनेकवाक्यगत उपमेयोपमान भाव हो तो रसनोपमा अथवा उपमेयोपमा होता है। जैसे 'चन्द्रायते शुक्लरूचापि हंस:' इस स्थल में रसनोपमा है और 'कमलेव मति: मतिरिव कमला' इस स्थल में उपमेयोपमा है। अतएव अनन्वय एकवाक्यगत विषय होता है।

उदाहरण में लक्षणसमन्वय - **राजीवमिव राजीवं जलं जलमिंवाजनि।**
चन्द्रश्चन्द्र इवातन्द्र: शरत्समुदयोद्यमे॥

श्लोकार्थ - शरद ऋतु के आविर्भाव काल में कमल कमल के समान, जल जलवत्, चन्द्र चन्द्रवत् निर्मलभाव को धारण करते हैं।

राजीव, जल, चन्द्र तीनों ही युगपत् रूप से उपमान और उपमेय हैं। अर्थात् राजीव आदि उपमान और उपमेय दोनों है। यहाँ राजीव आदि में एक ही वस्तु में उपमेयोपमानभाव की कल्पना है। अनन्वय सादृश्यमूलक अलंकार है। यह एक ही अलंकार वाक्य की सादृश्यता मूलक है।

सादृश्य सदैव दो वस्तुओं के मध्य संभव है। इस उदाहरण में एक ही वस्तु उपमान और उपमेय दोनों है।

26.4 रूपकांलकार

अलंकाराकाश में रूपकालंकार अत्यन्त प्रसिद्ध है। साहित्यदर्पण में रूपक का लक्षण है - **''रूपकं रूपितारोपाद्वि विषये निरपह्नवे।'**

अन्वय - निरपह्नवे विषये रुपितारोपे रूपकं अलंकार स्यात्।

शब्दार्थ – निरपह्नवे विषये = निषेधरहित विषय में, रूपितोरापे = उपमानपदार्थ का तादात्म्य में या अभेद में, रूपकम् = रूपकालंकार होवे।

सामान्यार्थ – निषेधरहित विषय उपमेय में रूप उपमान पदार्थ का आरोप (अभेदप्रतीति) ही रूपक अलंकार है। अर्थात् निषेध रहित उपमेय में उपमान के साथ उपमान पदार्थ की अभेद कल्पना है वह रूपक है। उपमेय की उपमानात्मक प्रतीति होती है। विषय के ऊपर विषयी का अभेदोरोप किया जाता है। रूपक उपमानोपमेय का अभेद आरोप करता है। विजातीय वस्तुओं की अत्यन्त सादृश्यता के कारण अभेद कल्पना संभव होती है। यहाँ अत्यन्त सादृश्यता से अभेदकल्पना पैदा होती है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय – मुखचन्द्र 'भाति:' यहाँ उपमेय निषेध रहित है। उपमेय मुख का उपमान चन्द्र के साथ अभेद कल्पना की गई है। यहाँ उपमेय मुख की उपमान चन्द्र, चन्द्रत्व से प्रतीति होती है। मुख के साथ चन्द्र का अभेदारोप होता है। मुख और चन्द्र में अत्यन्त सादृश्य है। अत: एव मुख और चन्द्र की अभेद कल्पना होती है। अत: यहाँ रूपक कहा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 26.1

1. अर्थालंकार कौन है?
2. अर्थालंकार का एक उदाहरण बताएँ?
3. अर्थालंकार का एक वैशिष्ट लिखिए।
4. उपमालंकार का लक्षण लिखिए।
5. उपमा कितने प्रकार की है?
6. पूर्णोपमा का लक्षण लिखिए।
7. लुप्तोपमा का लक्षण लिखिए।
8. अनन्वयालंकार का लक्षण लिखिए।
9. रूपकालंकार का लक्षण लिखिए।
10. पूर्वोपमा के चार अंग कौन से हैं?
11. लुप्तोपमा कितने प्रकार की है?

26.5 उत्प्रेक्षालंकार

यह सादृश्य मूलक अलंकार है। काव्यमार्ग में कवि जनों के साथ उत्प्रेक्षा अलंकार अत्यन्त प्रिय है। अलंकारशेखर में उत्प्रेक्षा को श्रेष्ठ माना है। नववधु के हास्य के समान यह अलंकार

मनोरम होता है। साहित्यदर्पण में लक्षण – भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।

अन्वय – प्रख्रतस्य परात्मना संभावना उत्प्रेक्षा भवेत्।

शब्दार्थ – प्रकृतस्य = उपमेय पदार्थ का, परात्मना = उपमान पदार्थ रूप से, सम्भावना = संशय, उत्प्रेक्षा = उत्प्रेक्षालंकार हो।

सामान्यार्थ – प्रकृतस्य (उपमेय) का परात्मना (उपमान) के साथ संभावना उत्प्रेक्षालंकार है। उपमेय का उपमानतादात्म्य से सम्भावना ही उत्प्रेक्षा है। अत्यन्त सादृश्य के कारण उपमेय का उपमानता से आशंका की जाये तो उत्प्रेक्षा होती है। उद् का अर्थ ऊर्ध्वगामी, प्रेक्षा का अर्थ दृष्टि होता है। जिस किसी वस्तु के भावनाकाल में भावनाकारी दृष्टि अत्यन्त उर्द्धगामी होती है। अतः वह उत्प्रेक्षा नाम से जाना जाता है।

उपमान और उपयोग की अत्यन्त सादृश्यता उत्प्रेक्षा का घटक है। फिर भी उपमेय और उपमान का भेद ज्ञान तिरोहित नहीं होता है। भेदज्ञान होने पर भी अभेदता से वर्णन के लिए कवि की इच्छा होती है। सम्भावना शब्द अर्थ संशय होता है। फिर भी शुद्ध संशय नहीं ग्रहण करना चाहिए। स्थाणु है अथवा पुरूष है यह ज्ञान शुद्ध संशयात्मक है यहाँ स्थाणु ही है यह निश्चयात्मक ज्ञान ही सम्भावना पद से कहा जाता है।

उत्प्रेक्षा का वैशिष्ट्य

1. उपमा के समान उत्प्रेक्षा में भी कवि कल्पना से एक वास्तवभिति है। जैसे तस्याः मुखं भाति पूर्णचन्द्र इवापरः।
2. उपमा के समान उत्प्रेक्षा में उपमानोपमेयभाव है। परन्तु अत्यन्त सादृश्यता के कारण उपमेय को उपमान से शंका करते है। इस प्रकार चिन्तन की भ्रमात्मक है या नहीं है या दोनों कह सकते हैं।
3. 'भ्रम यह ऐच्छिक है। इस कारण 'नूनं' तव मुखं चन्द्रः' स्थल में नायक का ज्ञान है क्योंकि मुख और चन्द्र समान वस्तु नहीं है।
4. यह सादृश्य मूलक अलंकार है।

उदाहरण में समन्वय – **ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।**
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव॥

श्लोकार्थ – ज्ञान होने पर भी मौन रहता है, शक्ति होने पर भी क्षमा है, त्याग करने में भी गर्व का अभाव है। रघुवंश के राजाओं में परस्पर विरोधी गुण एक साथ रहते हैं। परस्पर विशुद्धगुण सहोदर के समान रहते हैं।

इस श्लोक में ज्ञानादि गुण उपमेय है। सप्रसवा उपमान है, ज्ञानादिगुण सप्रसव रूप से उत्प्रेक्षा है। इव शब्द से सादृश्य की अधिकता से स्फुट हो रहा है। उपमेय (ज्ञानादिगुण को) उपमानत्व से (सप्रसवात्व से) आशंका होती है। अत्यन्त सादृश्यता के कारण प्रकृत उपमेय की (ज्ञानादिगुणों की) उपमानात्मा से (सप्रसवात्मना) से संभावना की गई है। अतः यहाँ उत्प्रेक्षालंकार है।

26.6 अपह्नुति

अपह्नुति सादृश्यमूलक अलंकार है। यह भी उपमानोपमेय विषय अलंकार है। अपह्नव का अर्थ गोपन या छिपाना हैं आरोपविषय (उपमेय) का अपह्नवनकरण (छिपाना) होता है। अतः इसे अपह्नुति अलंकार कहते हैं। साहित्यदर्पण में इसका लक्षण –

प्रकृतं प्रतिषिधयान्यस्थापनं स्यादपह्नुतिः।

अन्वय – प्रकृतं प्रतिषिधयान्यस्थापनं स्यात् अपह्नुति।

शब्दार्थ – प्रकृतम् = उपमेय का, प्रतिषिधय = साक्षात् या परोक्ष निषेध करके, अन्यस्य = उपमान की, स्थापनम् = स्थापना , अपह्नुति = अपह्नुति अलंकार, स्यात् = होवे।

उपमेय का निषेधपूर्वक उपमेय का उपमान के साथ तादाम्य से उपपादन को अपह्नुति कहते हैं। प्रकृत (उपमेय) का निषेध करके अन्य (उपमान) का आरोप करने को अपह्नुति कहते हैं। रूद्रट् के मत में अपह्नुति उपमेय निषेधपूर्वक उपमेय में उपमान को होने से स्थापना होती है। इस कारण की उपमान और उपमेय की अत्यन्त सादृश्यता होती है। अतः रूद्रट ने कहा है – ''अतिसाम्यात् उपमेयं यस्यामसदेव कथ्यते सदपि'' वामन ने भी कहा है – ''समेन वस्तुना अन्यापलापोखपह्नुतिः'' अर्थात् निषेध करके दो वस्तुओं के मध्य सादृश्य अत्यन्त आवश्यक होता है। उपमेय का निषेध दो प्रकार से होता है। 1. आदि मे निषेध बाद में आरोप 2. आदि में आरोप बाद में निषेध।

वैशिष्ट्य –

1. उपमेय वस्तु का निषेध होता है।
2. उपमेय के स्थान पर उपमान की स्थापना होती है।
3. उपमेय के निषेध व उपमान की स्थापना ऐच्छिक है।
4. सादृश्यमूलक अलंकार है।
5. उपमेय का निषेध दो प्रकार से होता है – 1. शुरू में निषेध बाद में आरोप, 2. शुरू में आरोप बाद में निषेध

उदाहरण में समन्वय –

नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिर्नैताश्च तारा नकेनभंगा।
नायं शशी कुण्डलितः फणीन्द्रो नासौ कलंकः शयितो मुरारिः॥

श्लोकार्थ– यह गगन नहीं अंबुराशि है, ये नक्षत्र नहीं ये तो नकेन समूह हैं, यह चन्द्र नहीं है यह तो कुण्डलित फणि है, न ही यह चन्द्र का कलंक है, अपितु कृष्ण सो रहे हैं।

इस श्लोक में नभोमण्डल, तारा, शशी कलंक ये उपमेय है। यहाँ अम्बुराशि, नकेनभंग, कुण्डलित, फणीन्द्र, मुरारि ये उपमान है। इस श्लोक में आकश, चन्द्र कलंक सभी सत्य है। किन्तु शुरू में गगनादि का निषेध करके उपमान सागरदि की सत्यरूप से स्थापना की गई है। यहाँ निषेध और स्थापन का हेतु सादृश्य है। नञ् शब्द से उपमेय रूप का निषेधपूर्वक उपमान का आरोप किया गया है। अतः यहाँ अपह्नुवपूर्वक आरोप होने से अपह्नुति अलंकार है।

आरोपपूर्वक अपह्नुति का उदाहरण –

विराजति व्योमवपुः पयोधिस्तारामयास्तत्र च फेनभंगाः॥
फणीश्वरोखयं द्विजराज मूर्तिर्नबाम्बुदश्रीर्ननु तस्य लक्ष्म॥

नभ, शरीर, सिन्धु शोभामान है, उस सिन्धु में नक्षत्ररूपी फेन समूह देखा जाता है। यहाँ वपु शब्द से मयट प्रत्यय करने से और यथाक्रम व्योम और नक्षत्र का निषेध करता है। परन्तु निषेध वाचन नञ् आदि साक्षात् नहीं हैं वस्तुतः गगन, नक्षत्र, में समुद्र के फेन समूह का आरोप किया गया है। यह निषेध गगनादि के निषेध के बिना कदापि संभव नहीं है। यहाँ शुरू में आरोप बाद में निषेध है और आरोप में सादृश्य ही कारण है। अतः आरोपपूर्वक अपह्नवमूलक अपह्नुति अलंकार है।

26.7 दृष्टान्तालंकार

यह बिम्बप्रतिबिम्ब मूलक अलंकार है। साधर्म्य और वैधर्म्य भेद से दो प्रकार का होता है। साहित्यदर्पण में लक्षण – ''दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्॥''

अन्वय – सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनं दृष्टान्तः।

शब्दार्थ – सधर्मस्य = समानधर्म विशिष्ट का, वस्तुनः = पदार्थ का, प्रतिबिम्वम् = प्रतिबिम्बभाव से स्थापना, दृष्टान्तः = दृष्टान्त अलंकार होता है।

सामान्यार्थ – प्रस्तुत (उपमेय) के समर्थन में सादृश्य वस्तु का प्रतिबिम्ब रूप से उपस्थापना दृष्टान्त अलंकार है। दृष्ट अन्त समर्थनीय होने पर समर्थक वस्तु के स्वरूप सादृश्य जिसमें है वह दृष्टान्त अलंकार है। अर्थात् समर्थनीय वस्तु में समर्थक वस्तु का जो सादृश्य है वह दृष्टान्त है। इसमें एक दृष्टान्त वाक्य और दूसरा दृष्टांतिक वाक्य होता है। प्रथम वाक्य समर्थक और दूसरा समर्थ्य होता है। यहाँ भी बिम्ब प्रतिविम्बभाव के मध्य सादृश्य ही नियामक है। जहाँ सादृश्य वाच्य से प्राप्त न होवे वहाँ तात्पर्य से प्राप्त होता है। प्रतिबिम्ब बिम्ब से भिन्न होता है। फिर भी प्रतिबिम्ब बिम्ब सदृश ही होता है।

वैशिष्ट्य –

1. इसमें दो स्वतन्त्र वाक्य होते हैं।

2. एक वाक्य का समर्थन दूसरे वाक्य से होता है। उनका उपमेय उपमान भाव सम्बन्ध होता है।

3. उपमान और उपमेय का धर्म पृथक्ता से कहना चाहिए।

4. धर्मो के मध्य में सादृश्य हों।

5. पुनः सादृश्य वाच्य नहीं होता है। अपितु सादृश्य तात्पर्यगम्य होता है।

उदाहरण में लक्षण समन्वय –

अविदित गुणापि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमपि मधुधराम्।
अनधिगतपरिमलापि हि हरति दृशं मालतीमाला॥

सामान्यार्थ – गुण के विदित न होने पर भी उत्तम कवि की उक्ति सुनने वालों के कानों में मधुधारा बरसाती है, सुगन्ध की प्राप्ति न करने पर भी चमेली की माला चित्त को आकृष्ट करती है। यहाँ कानों में मधुधरा बरसाना और नेत्र का आकर्षण ये दो भिन्न धर्म प्रीति जनक होने से दो वाक्यों के सादृश्यता का बोध कराते है। यह साधर्म्य में दृष्टान्त अलंकार का उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न 26.2

12. उत्प्रेक्षा कैसा अलंकार है?

13. उत्प्रेक्षा का लक्षण लिखिए।

14. उत्प्रेक्षालंकार का एक वैशिष्ट्य लिखिए।

15. अपह्नुति अलंकार का एक वैशिष्ट्य लिखिए।

16. अपह्नुति अलंकार का लक्षण लिखिए।

17. अपह्नुति में उपमेय का निषेध कितने प्रकार से होता है?

18. दृष्टान्त का एक वैशिष्ट्य लिखिए।

19. दृष्टान्त का लक्षण लिखिए।

26.8 समासोक्ति

लक्षण – विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में समासोक्ति का लक्षण –

समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिंगविशेषणैः।

व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः॥

टिप्पणी

अन्वय – समैः कार्यलिंगविशेषणैः प्रस्तुते अन्यस्य वस्तुनः यत्र व्यवहारसमारोपः सा समासोक्तिः।

शब्दार्थ – समैः = समान होने से (प्रस्तुत और अप्रस्तुत में तुल्य रूप में विद्यमान होने से), काव्यलिंगविशेषणैः = आलिंगन आदि क्रिया, पुंस्त्वादि लिंग से, नीलत्वादि व्यावर्तक धर्मरूप विशेषण से, प्रस्तुते = उपमेय पदार्थ में, अप्रस्तुतस्य = उपमानपदार्थ का, व्यवहारस्य = आचारण का, समारोप = सम्यक्तया आरोप, यत्र भवति = जहाँ होता है, सा समासोक्ति = वह समासोक्ति होता है।

सामान्यार्थ – समान क्रिया, समान लिंग अथवा समान विशेषण से उपमेय में उपमान का व्यवहार समारोप होता है वह समासोक्ति होता है। संक्षेप से उक्ति समासोक्ति होता है। आरोप में सादृश्य ही कारण होता है। वह सादृश्य, क्रिया लिंग या विशेषण पर आधरित होता है। प्रस्तुत के साथ अप्रस्तुत का साक्षात् सादृश्य न होता। वस्तुतः वाक्य में अप्रस्तुत का उल्लेख नहीं होता। लिंग आदि के सादृश्य के कारण अप्रस्तुत की प्रतीति होती है। अलंकार सर्वस्वकार के मत में केवल विशेषण सादृश्य का आश्रय होता है। जैसा कि कहा है – श्लिष्टविशेषणैरूपमानधीः समासोक्तिः। मम्मट ने भी कहा है – परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः।

उदाहरण के लक्षण समन्वय –

असमाप्तजिगीषस्य स्त्रीचिन्ता का मनस्विनः।
अनाक्रम्य जगत् कृत्स्नं नो सन्धयां भजते रविः॥

श्लोकार्थ – जिसको जीतने की इच्छा पूर्ण नहीं हुई है उस मनस्वी पुरूष को स्त्री की क्या चिन्ता होगी? जैसे सूर्य समस्त लोक को आक्रान्त किये बिना संध्या का आश्रय नहीं करता है। यहाँ सूर्य प्रस्तुत और नायक अप्रस्तुत है। संध्या प्रस्तुत, नायिका अप्रस्तुत। इसमें सूर्य में नायक का और संध्या में नायिका का व्यवहार समारोप है। यह समारोप लिंग सादृश्य के कारण है। यहाँ रवि तेजोमय है और संध्या काल विशेष है। रवि शब्द पुल्लिंग होने से नायक, संध्या शब्द स्त्रीलिंग होने से नायिका के व्यवहार समारोप होता है। अतः यहाँ समासोक्ति अलंकार है।

26.9 अतिशयोक्ति

भरत के परवर्ती सभी आचार्यों ने अतिशयोक्ति अलंकार को स्वीकार किया है। अतिशय, सम्भवातिरके या योग्यताविक्रम से कहा गया कथन अतिशयोक्ति है। वाग्भट्ट कहते हैं– 'अत्युक्तिः अतिश्योक्तिः'।

साहित्यदर्पण में लक्षण– ''सिद्धत्वेऽध्यवसायस्य अतिश्योक्तिर्निगद्यते''।

अन्वय – (प्रकृतस्य परात्मना) अधयवसायस्य सिद्धत्वे अतिशयोक्तिः निगद्यते।

शब्दार्थ – अध्यवसायस्य = प्रकृत के साथ अप्रख्रत (यथार्थवस्तु के साथ अयथार्थवस्तु) की अभेदप्रतीति, सिद्धत्वे = सिद्ध होने पर, अतिशयोक्तिः = अतिशयोक्ति अलंकार, निगद्यते = कहा जाता है।

सामान्यार्थ – विषय के साथ विषयी की अभेदप्रतीति का निश्चयात्मक होने पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है। अयथार्थ वस्तु द्वारा यथार्थ वस्तु का निर्गीण अध्यवसाय होता है। अर्थात् उपमेय का निर्गीण कर उसके बाद उपमान के साथ उसका अभेदज्ञान अधयवसाय है।

विश्वनाथ कहते है – ''विषयनिगरणेन अभेदप्रतिपत्तिः विषपिणः अध्यवसायः।'' उत्प्रेक्षा अलंकार में सम्भावना अनिश्चित रूप होती है। अतिशयोक्ति में कवि प्रौढोक्ति के कारण सम्भावना निश्चितरूप होती है।

उदाहरण में समन्वय – **कथमुपरि कलापिनः कलापो विलसति तस्य तलेखष्मीन्दुखण्डम्।**
कुवलययुगलं ततो विलोलं तिलकुसुमं तदधः प्रवालमस्मात्।।

श्लोकार्थ – नायिका के मस्तक पर मयूरपुच्छ (पंख), उसके नीचे अष्ठमी का चन्द्रमा, उसके नीचे चंचल नीलोपल युगल नेत्र, उसके नीचे तिल का फूल और उसके नीचे मूंगा किस तरह शोभित हो रहा है।

इस श्लोक 'कथम्' यह प्रश्नसूचक शब्द नहीं है अपितु सम्भावना सूचक है। यहाँ नायिका के केश कलाप, मस्तक, नेत्रयुगल, नासिका, अधर आदि उपमेयों का कलापिकलापा आदि उपमानों के साथ अभेदज्ञान से अधयवसाय की सिद्धि होने से अतिशयोक्ति अलंकार है। केशपाश को मयूर पंख से, कपाल को अर्द्धचन्द्र से, नेत्रों को कमल से नासिका को तिल फूल से, औष्ठ को रक्तप्रवाल (मूंगा) से अध्यवसाय किया है। उपमेय और उपमान में भेद होने पर भी। उपमान का उत्कट प्रधानता से उपमेय का निर्गीण होने से अभेद प्रतीति होती है। अतिशयोक्ति के बहुत से विभाग है।

पाठगत प्रश्न 26.3

20. समासोक्ति का लक्षण लिखिए।
21. समासोक्ति का क्या अर्थ है?
22. मम्मट ने समासोक्ति का क्या लक्षण दिया है?
23. समासोक्ति में आरोप में क्या कारण है?
24. अतिशयोक्ति का लक्षण क्या है?
25. वाग्भट्ट के मत में अतिशयोक्ति क्या है?
26. अधयवसाय का अर्थ क्या है?

पाठसार

इस पाठ में अर्थालंकार की समालोचना की गई है। अर्थालंकार में शब्द परिवर्तन सहन होता है। अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है। उपमा आदि अर्थालंकार है। इसमें प्रायः सादृश्य

मूलकता होती है। विजातीय वस्तुओं के विरूद्ध धर्म को न कहकर यदि गुणक्रियागत सादृश्य 'इव' शब्द से प्रतिपादित होवे तो वह उपलंकार होता है। वह पूर्णोपमा और लुप्तोपमा भेद से दो प्रकार का है। इसके बाद अनन्वय अलंकार का प्रतिपादन किया है। एक ही वस्तु को उपमान और उपमेय माना जाये वहां अनन्वय अलंकार होता है। उसके बाद रूपक, दृष्टान्त, उत्प्रेक्षा और अपह्नुति अलंकारों का प्रतिपादित किया है। प्राय: ये सभी सादृश्यमूलक अलंकार है। इन अलंकारों के लक्षण के बाद उदाहरण से लक्षण समन्वय किया गया है। यहाँ साहित्यदर्पणकार के अनुसार लक्षण और उदाहरण दिये गये है। कुछ स्थलों पर मम्मटादि आचार्यों के मतों का भी उल्लेख किया गया है।

आपने क्या सीखा

- अर्थालंकार का सामान्य परिचय जाना।
- अर्थालंकारों का वैशिष्ट्य जाना।
- श्लोकों में अर्थालंकार का निर्णय कर पाना जाना।

पाठान्त प्रश्न

1. अर्थालंकार के विषय में लघु टिप्पणी कीजिए।
2. उदाहरण रखकर उपमा का वर्णन कीजिए।
3. उपमा के भेदों को प्रतिपाद्य करके परिचय दीजिए।
4. उदाहरण को सामने रखकर उपमा के प्रत्येक भेद का वर्णन कीजिए।
5. उदाहरण सहित उत्प्रेक्षा का वर्णन कीजिए।
6. उदाहरण सहित दृष्टान्त का वर्णन कीजिए।
7. उत्प्रेक्षा की विशेषताएँ बताइए।
8. अपह्नुति की विशेषताएँ बताइए।
9. उदाहरण सहित अपह्नुति का वर्णन कीजिए।
10. उदाहरण सहित रूपक का वर्णन कीजिए।
11. उदाहरण सहित समासोक्ति का वर्णन कीजिए।
12. उदाहरण सहित अतिशयोक्ति का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1

1. जिस अलंकार में अर्थ को आश्रित करके कोई चमत्कृति होती है तो वह अर्थालंकार है।
2. उपमालंकार।
3. अर्थालंकार में सम अर्थक शब्दों का प्रयोग समर्थ होता है।
4. साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्ये उपमा द्वयोः।
5. दो प्रकार।
6. सा पूर्णा यदि सामान्यधर्म औपम्यवाचि च।
   उपमेयं चोपमानं भवेत् वाच्यम्।
7. लुप्ता सामान्यधर्मादेः एकस्य यदि वा द्वयोः।
   त्रयाणां वानुपादने श्रौत्यार्थी सापि पूर्ववत्।।
8. उपमानोपमेयत्वम् एकस्यैव तु अनन्वयः।
9. रूपकं रूपितारोपाद्वि विषये निरपह्नवे।
10. 1. उपमान, 2. उपमेय, 3. साधारण धर्म, 4. सादृश्यवाचक शब्द।
11. दो प्रकार।

26.2

12. सादृश्य मूलक उत्प्रेक्षा।
13. भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।
14. सादृश्य मूलक।
15. उपमेय का निषेध और उपमान का निषेध ऐच्छिक है।
16. प्रकृतं प्रतिषिधयान्यस्थापनं स्यादपह्नुतिः।
17. दो प्रकार।
18. सादृश्य वाच्य नहीं होता अपितु तात्पर्यगम्य होता है।
19. दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्।

26.3

20. समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यालिंग विशेषणैः।
    व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेखन्यस्य वस्तुनः।।

21. समासेन उक्तिः। संक्षेप कथन।

22. परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः।

23. सादृश्य।

24. सिद्धत्वेखधयवसायस्य अतिशयोक्तिर्निगद्यते।

25. अत्युक्तिः।

26. विषय निर्गीण से अभेदप्रतिपत्ति विषयी का अध्यवसाय है।

विशेष शब्दावली

उपमेय - सादृश्य का अनुयोगी उपमेय है। उपमीयते यत् तत् उपमेयम्।उप उपसर्ग पूर्वक मि धातु परिमापार्थक से यत् प्रत्यय होकर उपमेय शब्द बनता है। वर्णनीय विषय उपमेय है। जैसे चन्द्र इव मुखम्। जिसके साथ जिसकी तुलना की जाये वह उपमेय है। चन्द्र के साथ मुख की तुलना की गई है। अतः मुख उपमेय है। प्रायः तुलना महान् के साथ लघु वस्तु की जाती है। यहाँ चन्द्र अधिक सुन्दर है मुख की सुन्दरता की अपेक्षा। अतः लघु वस्तु उपमेय होती है।

उपमान - सादृश्य का प्रतियोगी उपमान होता है। उपमीयते सदृशीक्रियते येन तद् उपमानम्। वर्णनीय उपमेय का उपकारक उपमान होता है। जिस वस्तु की जिसके साथ तुलना की जाती है। वह उपमान होता है। 'चन्द्र इव मुखम्' में मुख की चन्द्र के साथ तुलना की गई। अतः चन्द्र उपमान है। प्रायः तुलना महान के साथ लघु वस्तु की जाती है। यहाँ चन्द्र अधिक सुन्दर है। मुख की सुन्दरता चन्द्र की अपेक्षा न्यून है। अतः महान वस्तु उपमान होती है।

साधारण धर्म - उपमेय और उपमान में संगति करने वाला धर्म साधारण धर्म होता है अर्थात् उपमेय और उपमान दोनों में जो समान धर्म रहता है वह साधरण धर्म होता है। जैसे 'चन्द्र इव मुखम् सुन्दरम्' यहाँ 'मुख और चन्द्र' मे समान धर्म सौन्दर्य है। यहाँ सौन्दर्य धर्म के आधार पर ही तुलना की जाती है। अतः दोनों में रहने वाला धर्म साधारण धर्म है।

औपम्यवाचक शब्द -उपमायाः भावः औपम्यम्। इव आदि उपमावाचक शब्द होते हैं। जिस शब्द से सादृश्य की स्पष्ट प्रतीति होती है। जैसे चन्द्र इव मुखम्। यहाँ चन्द्र के साथ मुख का साधर्म्य है। यह बात इव शब्द से स्पष्ट होती है। अतः इव उपमावाचक शब्द है।

बिम्ब - साक्षात् जो वस्तु है वह बिम्ब है। जैसे मुखम्। जैसे दर्पण में हम मुख देखते हैं। वह एक हमारा मुख है। दूसरे दर्पण में दूसरे का मुख है। साक्षात् मानवों का जो मुख है वह बिम्ब है। जिसकी प्रतिच्छवि दर्पण में है वह बिम्ब है।

प्रतिबिम्ब - किसी वस्तु से प्रतिच्छवि बनती है, वह प्रतिबिम्ब है जैसे दर्पण में स्थित मुख। जब हम दर्पण में मुख देखते हैं। तब दर्पण में मुख की कोई प्रतिच्छवि दिखाई देती है। वह ही प्रतिबिम्ब है।

प्रणिधानगम्य - इसका अर्थ है तात्पर्य से गम्यमान अर्थ। साक्षात् वाच्यार्थ नहीं होता है परन्तु तात्पर्य से अर्थ आता है।